विचार बिन्दु

दया चरित्र को सुन्दर बनाती है। –जेम्स एलन

छोटे कस्बों में आ रहा बदलाव भारत को बदल रहा है

राजनीतिक नारों और दलीय पक्षधरता वाले विश्लेषणों को छोड़ कर नई दृष्टि से देखें तो इक्कीसवीं सदी की चौथाई यात्रा पूरी कर रहा भारत बदल रहा है। इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं जब कुछ चीजें उन स्पष्ट तरीकों से नहीं बदलती हैं जिन्हें आंकड़ों या जीडीपी चार्ट से मापा जा सके। भारत में यह बदलाव प्रौद्योगिकी की तड़क-भड़क वाले बड़े शहरों में ही नहीं आ रहा है जहां पढ़ी-लिखी युवा पीढ़ी सेवा क्षेत्र में फल-फूल रही है, बल्कि छोटे शहरों और कस्बों में भी आ रहा है। किन्तु यह बदलाव हमारे मुख्यधारा के मीडियाकर्मियों की निगाह में नहीं आ रहा है। इसलिए इस बदलाव की कहानी जब विदेशी मीडिया में आती है तभी हमें उसका भान होता है। यह कहावत सही उतरती है कि हम हिन्दुस्तानी किसी अपने को तभी पहचानते हैं जब विदेश के लोग उसे पहचानने लगते हैं। भारत में आ रहा यह बदलाव केवल कुछ अकादमिक परिवर्तन या बौद्धिक पुनरुत्थान का नहीं हैं बल्कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी है। यह कुछ गहरा और अधिक मौलिक है। यह ऐसा बदलाव है जो पलटा नहीं जा सकता।

प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका नेशनल ज्योग्राफी ने पूर्वी राजस्थान के एक छोटे से कस्बे गंगापुर के स्थानीय उद्यमियों पर अपने जुलाई अंक में फीचर स्टोरी '**व्हेयर आइसक्रीम इज़ किंग**' की है जो इस बदलाव की खबर देती है। ब्रायन केविन के आलेख और फेडेरिको बोरेला तथा माइकल बाल्बोनी के खींचे अनेक चित्रों सहित मैगज़ीन की कहानी प्रतिष्ठित संस्थानों की ऊंची डिग्रियों को लेकर सफलता के ऊंचे मचानों पर चढ़ने वालों की नहीं है। वह ज़मीन से जुड़े मगर शहरी लोगों से पीछे छूट गये अति सामान्य ग्रामीण और कस्बाई लोगों की कहानी है जो गंगापुर को भारतीय उद्यमशीलता का ज्वलंत उदाहरण बताती है। इस पत्रिका का आलेख एक उदाहरण से शुरू होता है:– जब शाहरुख शाह बालक था तब गंगापुर छोटा, धूल भरा कस्बा हुआ करता था, जिसकी कोई ख्याति नहीं थी। वहां लोगों का मुख्य धंधा खेतीबाड़ी का था। जैसा आम तौर पर गावों में होता है शाह के परिवार पास के तीन एकड़ जमीन थी जिस पर मक्का और गेहूं की फसलें होती थी। लेकिन देश के सबसे बड़े और सबसे शुष्क राज्य में खेती कभी आसान नहीं रही। और जैसे-जैसे शाह बड़ा हुआ खेती और भी कठिन होती गयी क्योंकि बारिश का मौसम और भी अनिश्चित होता गया। सूखा अधिक बार पड़ता और सिंचाई के लिए पानी मिलना मुश्किल होता गया। फिर, 2014 के आसपास, जब शाह किशोर अवस्था में था, उसके पिता ने खेतीबाड़ी छोड़कर उस व्यवसाय को अपनाने का फैसला किया जिसने गंगापुर को मानचित्र पर ला खड़ा किया। यह मानचित्र है आइसक्रीम।

कोई भी यह जानकर दंग रह सकता है कि आज गंगापुर आइसक्रीम की गाड़ियों के निर्माण का केंद्र बन गया है। इसके मुख्य मार्ग का लगभग एक किलोमीटर से अधिक लंबा हिस्सा गैरेजों से घिरा हुआ है जो गाड़ियों की बॉडी बनाने और सजाने तथा उन्हें मिनी ट्रकों के बेड पर जोड़ने में माहिर हैं। टेम्पो कहलाने वाले वाहनों को रंगीन साइनेज और एलईडी लाइट्स से सजाया जाता है, और लगभग 21,000 लोगों का शहर प्रिंट शॉप और स्टोरफ्रंट से भर गया है। यहां के अपने बूते पर उद्यमी बने लोग आइसक्रीम टेम्पो के मालिकों के लिए कूलर, मिक्सर मशीन, सिरप और स्कूप बेचते हैं। हालांकि ऐसी गाड़ियां बनाना लंबे समय से गंगापुर में एक छोटा उद्योग रहा है, लेकिन जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय जल संकट के कारण आइसक्रीम टेम्पो की मांग बढ़ गई है, और उसी में राजस्थान के किसान वैकल्पिक आय की तलाश कर रहे हैं – शाह के परिवार जैसे शुरुआती अपनाने वालों ने यह दिखाया है कि आइसक्रीम से पैसे कैसे कमाए जा सकते हैं।

गंगापुर के लोगों ने जो कर दिखाया है वह हमारे राजनीति की खबरों की चकाचौंध में रहने के आदी हो चले मीडिया को नहीं दिखता। गंगापुर नये भारत का वह ट्रेंड दिखाता है जिसमें लोग डिग्रियां लेकर नौकरियों नहीं मिलने का रोना नहीं रोते हैं। इस कस्बे के लोगों ने अपने देशी कौशल और मेहनत से जो रास्ता बनाया है वह भारत की नई तकदीर गढ़ता है। शाह कहते हैं, "हम चार से छह महीने काम करके एक साल के लिए पर्याप्त कमा लेते हैं।" उन्होंने अपने पिता के टेम्पो से आइसक्रीम बेचना शुरू किया और अब, 30 साल की उम्र में, गंगापुर से 50 मील दूर एक गांव में हर गर्मियों में अपनी खुद की आइसक्रीम पार्लर चलाते हैं। वह कई मौसमी आइसक्रीम विक्रेताओं को जानते हैं जो दूर-दूर तक यात्रा करते हैं – कभी-कभी एक हज़ार किलोमीटर से भी ज़्यादा। ऐसे विक्रेता देश में इन चौराहों पर नज़र रखते हैं जहां नाश्ता खरीदने वाले मध्यम वर्ग की संख्या बढ़ गई है। गर्मियों में गंगापुर एक महत्वपूर्ण विपणन केंद्र बन जाता है, जहां पूरे भारत से आइसक्रीम विक्रेता टेम्पो बनवाने के लिए वहां आते हैं। बाबा रायचंद, जिन्होंने गंगापुर की टेम्पो दुकानों के लिए यूट्यूब मार्केटिंग वीडियो रिकॉर्ड करने को अपना पेशा बना लिया है, कहते हैं कि शहर में 200 से ज़्यादा टेम्पो बनते हैं, जो तीन साल पहले की तुलना में दोगुने हैं। यहां के उद्यमी दूर-दराज के इलाकों तक के ग्राहकों को सेवाएं देते हैं। शाह का अनुमान है कि पिछले 10 सालों में गंगापुर ने लाखों आइसक्रीम टेम्पो बनाए हैं – जिनमें से उन्होंने खुद लगभग 80 बनाए हैं। उन्होंने चार साल पहले अपनी खुद की फैब्रिकेशन शॉप खोली थी ताकि गर्मियों में जब वे आइसक्रीम की बिक्री नहीं कर रहे होते हैं तो उस समय का भी फ़ायदा उठा सकें। गंगापुर के ही आशीष सुवालका को भारतीय उपमहाद्वीप में आइसक्रीम की मांग की कोई सीमा नहीं नजर आती है, वह असीमित है। गंगापुर के एक किसान परिवार से आने वाले सुवालका अब दक्षिणी राजस्थान के लगभग पांच लाख की आबादी वाले शहर उदयपुर में रहते हैं। 24 साल की उम्र में उनके पास तीन आइसक्रीम टेम्पो हैं और उन्हें चलाने के लिए एक छोटा सी टोली भी है। सुवालका कहते हैं, "आबादी बढ़ रही है और अब हर कोई कुछ मीठा चाहता है।"

पिछले दो दशकों में भारत के छोटे कस्बों में छोटे उद्यमों के उभार के उल्लेखनीय बदलाव आए हैं। यह ऐसे बदलाव हैं जो समाज और अर्थव्यवस्था बदल रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव स्थानीय उद्यमिता के स्तर पर देखा जा सकता है। सरकारी योजनाओं, माइक्रो-फाइनेंस, डिजिटल लेनदेन और नई तकनीक ने कस्बों में स्वरोज़गार और छोटे उद्योगों के लिए नए अवसर खोले हैं।

देश में आ रहे बदलाव का गंगापुर एक अकेला उदाहरण नहीं है जिसे संयोग से विदेशी पत्रिका ने खोज लिया। छोटे कस्बों का बदलता परिदृश्य भारतीय मीडिया में उपेक्षा क्यों पाता है इस पर पत्रकारिता का कोई विश्वविद्यालय अध्ययन भी नहीं कराता। भारत के छोटे कस्बे लंबे समय तक विकास की दौड़ में पिछड़े हुए माने जाते रहे हैं। महानगरों की चमक और राजधानी के राजनीतिक-सांस्कृतिक विमर्श ने अक्सर इन कस्बों के जीवन को ढक लिया। परंतु पिछले दो दशकों में भारत के छोटे कस्बों में छोटे उद्यमों के उभार के उल्लेखनीय बदलाव आए हैं। यह ऐसे बदलाव हैं जो समाज और अर्थव्यवस्था बदल रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव स्थानीय उद्यमिता के स्तर पर देखा जा सकता है। सरकारी योजनाओं, माइक्रो-फाइनेंस, डिजिटल लेनदेन और नई तकनीक ने कस्बों में स्वरोज़गार और छोटे उद्योगों के लिए नए अवसर खोले हैं। मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर, ऑनलाइन डिलीवरी सेवाओं, ब्यूटी पार्लर, छोटे ढाबों से लेकर मिनी-मॉल और स्थानीय ब्रांडेड दुकानों तक-छोटे कस्बों की अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे आत्मनिर्भर और विविधतापूर्ण बन रही है। डिजिटल क्रांति ने भी अवसरों की नयी राहें खोल दी है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुंच ने इन कस्बों की सोच और आकांक्षाओं को नया आयाम दिया है। शिक्षा, ई-कॉमर्स और ऑनलाइन बिज़नेस ने यहां के युवाओं को सीधे वैश्विक प्रतिस्पर्धा से जोड़ दिया है। अब कस्बों के युवा यूट्यूब चैनल चला रहे हैं, इंस्टाग्राम पेज बना रहे हैं, ऑनलाइन ट्यूशन और ग्राफिक डिजाइनिंग जैसी सेवाएं बेच रहे हैं।

यह सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का भी संकेत है। विकास केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी दिखता है। बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसरों के कारण महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। छोटे कस्बों में पहले जो सीमित सांस्कृतिक गतिविधियाँ थीं, आज वहां स्थानीय मेलों, थिएटर, और स्टार्टअप मीटअप जैसे आयोजन होने लगे हैं। मगर सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात है मीडिया की उपेक्षा की। वह इतने महत्वपूर्ण बदलावों को नहीं देख रहा है। मुख्यधारा का मीडिया प्राय: केवल राजनीतिक संघर्ष, अपराध या सनसनीखेज घटनाओं पर ही ध्यान केंद्रित करता है। यह समाचार मीडिया अच्छा व्यवसायी भी नहीं है। यह भी सच है कि मीडियाकर्मी होने का मुखौटा लगाए कुछ लोग अपनी कमाई समाचार व्यवसाय से नहीं अपराध से करने में लगे हैं जिनकी खबरें यदा-कदा सामने आती भी हैं। छोटे कस्बों में पनपते उद्यम, स्थानीय नवाचार, या नई सामाजिक पहलें समाचार मीडिया की प्राथमिकताओं में नहीं होतीं। परिणामस्वरूप इन परिवर्तनों की चर्चा न तो राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनती है और न ही नीति-निर्माण की ठोस दिशा तय कर पाती है। इंफ्लुएंसर बन कर प्रचार का धंधा करना अब सबको भाता है। मीडियाकर्मी बनाने वाले शिक्षा संस्थान भी अपने विद्यार्थियों को वह दृष्टि नहीं दे पाते हैं क्योंकि वहां के शिक्षक जड़ हो चुके हैं और किताबी ज्ञान के ही जर्जर ताने-बाने बुनते रहते हैं। भारत के छोटे कस्बे अब 'पिछड़ेपन' का पर्याय नहीं रहे हैं। वे आज परिवर्तन और संभावनाओं के जीवंत केंद्र बन चुके हैं। यह आवश्यक है कि मीडिया अपनी दृष्टि को महानगरों से हटाकर इन कस्बों की ओर मोड़े, ताकि विकास की सच्ची कहानी सामने आ सके और वहां की जरूरतें भी। तभी यह बदलाव नीति निर्माताओं को भी दिशा दे सकेगा।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

शालीनता और शुचिता की सीमा लांघते शब्द

डॉ. कैलाश चन्द सैनी

लोकसभा में विपक्ष के नेता द्वारा निर्वाचन आयोग पर 'वोट चोरी' के गम्भीर आरोप लगाने पर 14 अगस्त को कहा कि विपक्ष 'वोट चोरी' जैसे गंदे शब्दों का इस्तेमाल न करें। ऐसे गंदे वाक्यांशों का इस्तेमाल न केवल करोड़ों भारतीय मतदाताओं पर सीधा हमला है, बल्कि लाखों चुनाव कर्मचारियों की ईमानदारी पर भी हमला है। आयोग द्वारा कहा गया कि 'यदि किसी के पास किसी व्यक्ति द्वारा किसी चुनाव में दो बार मतदान करने का कोई सबूत है, तो उसे लिखित हलफनामे के साथ भारत के सभी मतदाताओं को बिना किसी सबूत के 'चोर' बताने के बजाय, चुनाव आयोग के साथ साझा किया जाना चाहिए।'

अनुशासित कही जाने वाली भारतीय जनता पार्टी की मध्य प्रदेश सरकार में एक मंत्री ने ऑपरेशन सिन्दूर के समय अपनी वाणी का संयम खोकर एक महिला सैन्य अधिकारी के सम्बन्ध जो वक्तव्य दिया उसने शालीनता की सीमाओं को लांघ दिया जिसकी देश में घोर निन्दा हुई और न्यायालय के दखल के बाद मंत्री को माफी मांगनी पड़ी। पिछले लोकसभा चुनाव के समय देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस की ओर से प्रधानमंत्री के लिए 'चौकीदार चोर है' जैसे शब्दों का इस्तेमाल द्वारा किया गया। कांग्रेस के युवा नेता द्वारा जन-सभाओं में 'चौकीदार चोर है' का नारा लगाया गया था। विदेशों में बसे मेरे भारतीय मित्रों ने जब सोशल मीडिया के माध्यम से जानना चाहा कि क्या इसमें कोई सच्चाई है? मैंने अपनी समझ से उन्हें उत्तर तो दे दिया, मगर मन में एक अपमान बोध-सा महसूस हुआ और प्रश्न उठा कि हमारी राजनीति में शब्दों की शालीनता और शिष्टता में गिरावट कहां तक जाएगी?

चौकीदार चोर है, वोट चोरी, लोकतंत्र समाप्त हो रहा है, जैसे नारों का उपयोग करने वाले दलों पर ही इसका उल्टा प्रभाव पड़ जाये तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे देश का पढ़ा-लिखा मतदाता अब समझदार हो गया है। भारत की राजनीति में आज भाषायी शालीनता का तेजी से ह्रास होता जा रहा है। मैंने अपने राजकीय सेवा काल के 40 वर्षों में से 30 वर्ष राजस्थान विधान सभा जैसे गरिमामयी संस्थान में कार्यरत रहते हुए राजनीति से जुड़े माननीयों के बीच बिताये हैं। यहां सम्पूर्ण प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा सदन में की जाने वाली चर्चा देखने-सुनने का अवसर मिला। मेरे अनुभव का निचोड़ यही रहा कि भाषा की जो शालीनता राजस्थान की संस्कृति में है वह अपने आपमें अद्भुत है। सदन में जहां सत्ता पक्ष के नेताओं द्वारा अपनी उपलब्धियां गिनाई जाती हैं। वहीं विपक्ष उनकी कटु आलोचना करता है। वाद-विवाद से हमें नई जानकारियां मिलती हैं और अधिक जानने की इच्छा भी बलवती है। राजस्थान विधानसभा में एकाधिक बार सदस्य रहे भैरोंसिंह शेखावत, हरिशंकर भाभड़ा, वसुन्धरा राजे एवं सुमित्रा सिंह, गुलाबचन्द कटारिया, वासुदेव देवनानी, हरिदेव जोशी, अशोक गहलोत, परसराम मदेरणा, डॉ. सी.पी. जोशी, शिवनाथ सिंह, पूनमचन्द विश्नोई जैसे माननीय सदस्यों को सदन में कभी असंसदीय शब्दावली का प्रयोग करते नहीं देखा गया। सदन में ज्वलंत मुद्दों को बेबाकी से उठाने वाले सुरेन्द्र व्यास ने भले ही मुख्य मंत्रियों तक की कटु एवं तीखी आलोचना की हो लेकिन कभी असंसदीय शब्दावली का प्रयोग नहीं किया। संविधान के अनुच्छेद 105 एवं 194 में सांसदों और विधायकों को सदनों में बोलने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। लेकिन आवेश और आवेग में जब वे असंसदीय शब्दों का इस्तेमाल कर जाते हैं तो अध्यक्ष द्वारा उन शब्दों को कार्यवाही के अधिकृत अभिलेख से निकाल दिया जाता है। ऐसे में यह विचारणीय है कि सदनों की कार्यवाही से निकाली जाने वाली असंसदीय अभिव्यक्तियों का क्या औचित्य रह जाता है। इस बारे में अनेक संसदीय विद्वानों और राजनीतिज्ञों ने मत व्यक्त किया है कि ऐसी अभिव्यक्तियों को कार्यवाही से नहीं निकाला जाये और जनता के प्रतिनिधियों द्वारा प्रयुक्त भाषा को ज्यों का त्यों रखा जाये।

बड़े दु:ख की बात है कि पक्ष-विपक्ष के नेताओं के बीच पारस्परिक सम्मान तथा भाषायी शालीनता आज कहीं तिरोहित होती जा रही है। भारत की राजनीति में भाषाई अभद्रता का तेजी से सामान्यीकरण हो रहा है। चिंता इस बात की भी है कि इसे रोकने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किये जा रहे। वर्तमान 16वीं राजस्थान विधान सभा के अभी तो 3 ही सत्र हुए हैं लेकिन यह भी असंसदीय शब्दों के इस्तेमाल से अछूती नहीं है। तीसरे सत्र में एक मंत्री द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री के लिए किये गये 'दादी' शब्द के प्रयोग पर विपक्ष के विरोध के कारण कई दिन तक सदन में हंगामा और गतिरोध रहा। विपक्ष के 6 विधायकों के निलम्बन पर सदन में धरना दिया गया। 24 फरवरी 2025 को सभा की कार्यवाही के स्थगन के उपरांत सभा कक्ष में धरना दे रहे विपक्षी सदस्यों में से एक वरिष्ठ सदस्य द्वारा आसन (अध्यक्ष) के प्रति जो कुछ कहा गया वह राजस्थान की राजनीति में भाषा की मर्यादा को तार-तार कर गया। चूँकि उस वक्त सभा की बैठक नहीं हो रही थी लेकिन पत्रकार दीर्घा में समाचार पत्रों के रिपोर्टर उपस्थिति थे जिससे वरिष्ठ विधायक द्वारा प्रयुक्त असंसदीय शब्दावली एक प्रमुख अखबार में यथावत प्रकाशित हो गई जिससे जनता ने देखा और पढ़ा कि हमारे नेताओं के बिगड़े बोल किस स्तर तक जा सकते हैं!

राजस्थान की संस्कृति और राजनीति में 'पोपा बाई का राज' एक प्रसिद्ध मुहावरा है जिसका उपयोग ऐसी स्थिति के लिए किया जाता है जब किसी सरकार या संगठन में अव्यवस्था का बोलबाला होता है। राजस्थान विधान सभा के सदन में कई बार इस मुहावरे का प्रयोग किया गया और इसे असंसदीय माना जाता था लेकिन 12वीं विधान सभा की अध्यक्ष सुमित्रा सिंह ने इस विषय पर सदन में कुछ देर चर्चा करवाई जिसके बाद इसे असंसदीय नहीं माना गया। वर्तमान में भारतीय राजनीति में वाणी का संयम खोते नेताओं के बिगड़े बोल, अशालीन, अभद्र और असभ्य भाषा की मानसिकता चिन्ताजनक है। देश के नेताओं और मंत्रियों को ऐसे स्तरहीन कथनों और वक्तव्यों से परहेज करना चाहिए। नियंत्रण और अनुशासन के बिना राजनीतिक शुचिता एवं आदर्श राजनीतिक मूल्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। आज चर्चा में बने रहने के लिए ही सही, राजनेतागण ऐसे विवादित बयान देते रहते हैं, जिससे ऐसा परिवेश निर्मित होता है जिसमें आमजन के मन में राजनीति और राजनेताओं के लिये वितृष्णा ही पनपती है। यह सही है कि शब्द आवाज नहीं करते और देखने-सुनने में छोटे होते हैं पर इनके घाव बहुत गहरे होते हैं और देर तक रहने वाला इनका प्रभाव दूर तक पहुंचता है। राष्ट्रीय एकता एवं राजनीतिक ताने-बाने को ध्वस्त कर रहे बिगड़े बोलों की समस्या दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। राजनेताओं के नफरती, उन्मादी, द्वेषमूलक और भड़काऊ बोलों को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने भी कड़ी टिप्पणियां की हैं। राजनीति का उन्माद एवं 'हेट स्पीच' के कारण न केवल विकास बाधित हो रहा है, बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

भाषा की मर्यादा सभी स्तर पर होनी चाहिए। कई बार आवेश में या अपनी बात को प्रभावी तरीके से कहने के चक्कर में गलत शब्दों का चयन हो जाता है जिसका परिणाम घातक होता है। मुद्दों, मामलों और समस्याओं पर बात करने की बजाय जब नेता एक-दूसरे पर निजी हमले करने लगते हैं तो यह उनकी हताशा, निराशा और कुंठा का ही परिचायक होता है। सत्ता के अहंकार में आज अनेक नेताओं की यह आदत-सी बन गई है कि एक गलती या असत्य को छिपाने के लिए वे निरंतर गलतियां करते रहते हैं। एक अच्छा नेता वही होता है, जो गलतियां नहीं करता और अगर गलती हो जाए तो उसे तत्काल सुधारता है। जिम्मेदार पदों पर बैठे नेताओं को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि उनके अच्छे-बुरे बोल व गलत-सही कारनामे इतिहास में दर्ज हो रहे हैं। टैक्नोलॉजी के विकसित होने से यह ध्यान रखना चाहिए कि पहले केवल शब्द वायरल होते थे, पर अब शब्दों के साथ वीडियो भी वायरल होता है। अत: देश के जिम्मेदार दलों के नेताओं को कोई भी राष्ट्र-विरोधी और अप्रिय वक्तव्य देने से बचना चाहिए।

नेता चाहे सत्ता पक्ष के हों या प्रतिपक्ष के, जोश में अक्सर वाणी का संयम, शालीनता और शिष्टता की सीमा लांघ जाते हैं। समय-समय पर माननीय सर्वोच्च सुप्रीम न्यायालय द्वारा दिये गये निर्देशों का भी ध्यान नहीं रखते। देश एवं दुनिया की नजरें नफरती सोच को प्रश्रय देने वाले नेताओं के नकारात्मक कृत्यों पर टिकी हैं। वे क्या बोलते हैं, क्या सोचते हैं, इसी से भारतीय लोकतंत्र की गरिमा दुनिया में बढ़ सकती है। जरूरत है कि हमारे राजनीति दल अपनी सोच को परिपक्व बनाये, मतभेदों को स्वीकारते हुए मनभेद को पनपने न दे। राजनीति में शब्दों की शालीनता बहुत आवश्यक है। यह न केवल एक सभ्य समाज की पहचान है, बल्कि यह राजनीतिक संवाद को भी स्वस्थ और रचनात्मक बनाती है। सभ्य और शालीन भाषा से एक सकारात्मक और सम्मानजनक माहौल बनाता है, जहाँ लोग अपनी राय व्यक्त करने में स्वयं को सहज महसूस करते हैं। शालीनता और शुचिता लोगों को एक-दूसरे की बात सुनने-समझने को प्रेरित करती है जिससे होने वाली चर्चाएं रचनात्मक होती हैं जो विश्वास और सम्मान की भावना को बढ़ाती हैं।

- डॉ. कैलाशचंद सैनी
पूर्व मुख्य शोध एवं संदर्भ अधिकारी, राजस्थान विधानसभा, जयपुर।

राजनीति में विरोध : आलोचना

रामनिवास बैरवा

पूंजीवाद की सफलता इसी में है कि वह एक तरफ तो आदर्शों का आडम्बर खड़ा करता है तो दूसरी तरफ चरित्र हनन के द्वारा अपने प्रतिद्वंद्वी को खतम करता है। भारत की वर्तमान राजनीति भी इन्हीं दो तथ्यों को अपना कर चल रही है। लोकतन्त्रों में सभी भागीदार राजनीतिक पार्टियां अपने उच्चतम लोकतान्त्रिक मूल्यों के तहत सत्ताधारी पार्टी विपक्ष की आलोचना करता है वहीं विपक्ष सत्ताधारी पार्टी की नीतियों और गतिविधियों का विरोध करता है। लेकिन, जहां लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं, लोकतान्त्रिक परम्पराएं कमजोर होती हैं, वहां विरोध गायब हो जाता है बस आलोचना करना ही बचता है। सिद्धांतहीनता, सिद्धांतों की दिशाहीनता अपने प्रतिद्वंद्वी-विपक्षी की आलोचना को चरित्र हनन में बदल देते हैं। आलोचनाएं तब ही सार्थक होती हैं जब कोई सिद्धांत हो, सैद्धान्तिक आधार हो। बिना सिद्धांतों के, बिना सैद्धान्तिक आधार के आलोचना अक्सर व्यक्तिगत आक्षेपों से आगे बढ़कर चरित्र हनन तक चली जाती है।

आज की भारतीय राजनीति में अढ़ाई विचारधाराएं सक्रिय है, जिनका भारत के संविधान में भी जिक्र है। इन अढ़ाई विचारधाराओं, सिद्धांतों में एक है पूंजीवाद जो कि अवश्यम्भावी है और जिसकी राजनीतिक अभिव्यक्ति लोकतान्त्रिक व्यवस्था में दिखाई देती है। दूसरी सैद्धान्तिक विचारधारा है कम्युनिज्म की, साम्यवाद की, जो भविष्य की समाजवादी व्यवस्था का वाहक है। भारत के संविधान में मूल अधिकारों और राज्यों की नीति के निदेशक तत्वों के रूप में इन्हें देखा जा सकता है। राज्यों की नीति के निदेशक तत्वों को राज्यों के नीति निर्माण में स्वैच्छिक बना कर सामन्तवादी सामाजिक तत्वों को जीवित रखा गया है, यही वह आधा तत्व है जो विचारों की सिद्धान्तों में आधी-अधूरी विचारधारा को जोड़ता है जो इन्हें अढ़ाई सैद्धांतिक बनाती है। इन्हीं दोनों का संघर्ष राजनीतिक पार्टियों में भी दिखाई देती है, जिनमें अर्द्धतत्व सामन्तवाद का जुड़ हुआ है।

इस प्रकार से आधा सिद्धांत, आधी विचारधारा है सामन्वादी समाज व्यवस्था की। पूंजीवाद भी इसे अपनी सुरक्षा का कवच बनाये हुए है और कम्युनिज्म भी इसी को आधार बनाकर पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष करता है। चूंकि भारत की सामन्तवादी व्यवस्था सामूहिक, सामाजिक गुलामी की विचारधारा पर आधारित है, जो जातियों के रूप में मौजूद है अत: उस जातीय व्यवस्था के प्रति व्यवहार के चरित्र को पूंजीवाद ने अपनाकर अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ रहा है, जिसमें सामूहिक चरित्रहनन सामान्य व्यवहार का घोतक है।

लोकतन्त्र में विरोध सरकारी पक्ष की उन गतिविधियों पर आधारित होता है जो विरोधी दलों को सामाजिक रूप से लाभदायक नहीं हो। विरोध में उन गतिविधियों को पूरी तरह से हटा देने की मांग अन्तर्निहित होती है। वहीं पर आलोचना या तो सिद्धांतों पर आधारित होती है या व्यक्तिगत आक्षेप लगाने पर आधारित होती है। यह राजनीतिक पार्टियों यह आलोचना, यह विरोध उनका संघर्ष नहीं है, बल्कि उनके अन्तर्विरोध हैं, जिसे संघर्ष के रूप में जनता के सामने लाया जाता है। ऐसे में सत्ताधारी पार्टी यही चाहती है कि उनकी सत्ता लम्बे समय तक बनी रहे। और चूंकि सभी राजनीतिक पार्टियों का गठन सामन्तवादी सामाजिक आधारों पर किया हुआ है अत: उनमें विचाराधारात्मक मतभेद नहीं होता है और वे, उसी सामन्तवादी व्यवहारों के अनुसार सामूहिक चरित्र हनन के साथ-साथ व्यक्तिगत चरित्र हनन को अपनी बढ़त बनाने का आधार बना लेते हैं।

इसी परम्परा में पिछली आधी शताब्दी से भी ज्यादा समय से देखा जा रहा है कि लोकतन्त्र को कथित रक्षक राजनीतिक पार्टियों किसी भी विचारधारात्मक विरोध या आलोचना को पीछे धकेलते हुए हरेक स्तर के प्रमुख नेताओं, लोगों के व्यक्तिगत चरित्र हनन का रास्ता अपनाये हुए है जिससे पिछले सौ वर्षों से भी अधिक के समय में उभरे नेताओं के व्यक्तिगत चरित्र का हनन करने की एक परम्परा बना ली गई है। यह भारतीय राजनीति का निकृष्टतम स्वरूप है जिससे बड़े, छोटे सभी नेता अपनी कुंठाओं को बाहर निकालते हैं, अपने खुद के हीन चरित्र को छुपाने के लिए जोर-शोर से एक-दूसरे के व्यक्तिगत चरित्र पर लांछन लगाते हैं। इस प्रकार के चरित्रहनन में अनिवार्य रूप से महिलाओं का भी सामूहिक चरित्र हनन किया जा रहा है। और हरेक आलोचना, हरेक विरोधी देशद्रोही बनाया हुआ है।

- रामनिवास बैरवा
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में 10 करोड़ पौधारोपण का लक्ष्य पार

ईशा सैनी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रेरणादायी नेतृत्व में राजस्थान ने "हरियालो राजस्थान वृक्षारोपण महाभियान" को एक जनआंदोलन का रूप दिया है। प्रदेश में इस मानसून में 10 करोड़ पौधारोपण का लक्ष्य हासिल हो चुका है, मानसून अभी विदा नहीं हुआ है, पौधारोपण जारी है जिससे उम्मीद की जा सकती है कि उपलब्धि ऐतिहासिक होगी। यह अभियान राजस्थान को हरियाली से आच्छादित करने की ऐतिहासिक पहल के रूप में देखा जा रहा है।

राज्य सरकार ने इस वर्ष 10 करोड़ पौधे लगाने का संकल्प लिया था। अब तक 10 करोड़ 21 लाख 22 हजार 351 पौधे लगाए जा चुके हैं। इनमें व्यक्तिगत वृक्षारोपण संख्या 37 लाख 51 हजार 534 और ब्लॉक स्तर वृक्षारोपण संख्या 9 करोड़ 83 लाख 70 हजार 817 रही। पिछले साल भी इस अभियान के तहत 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए थे। इस बार शिक्षा विभाग, वन विभाग, आरडीपीआर और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सहित विभिन्न विभागों की सक्रिय भागीदारी रही। 27 जुलाई, 2025 को हरियाली तीज पर आयोजित 76वें राज्य स्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर मात्र एक दिन में 2 करोड़ 50 लाख पौधारोपण कर नया रिकॉर्ड बनाया गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 'मिशन हरियालो राजस्थान' के तहत पाँच वर्षों में 50 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'एक पेड़ माँ के नाम' महाअभियान से भी जोड़ा गया है। राज्य सरकार वृक्ष मित्र योजना भी चला रही है। 200 पौधे लगाने वाले को वृक्ष मित्र का दर्जा दिया जाएगा। पूरे प्रदेश में 2 हजार वृक्ष मित्र बनाए जा रहे हैं जिन्हें मानदेय भी मिलेगा। इसके साथ ही हर जिले में आमजन की सहभागिता से मातृ वन विकसित किए जा रहे हैं। लोग जन्मदिवस, सालगिरह या स्मृति स्वरूप पेड़ लगाकर पर्यावरण संरक्षण से जुड़ रहे हैं।

राज्य सरकार पौधों का अधिकतम सर्वाईवल सुनिश्चित करने के लिए जलवायु और मिट्टी की अनुकूलता को प्राथमिकता दे रही है। इससे पौधों के जीवित रहने और वृक्ष बनने की संभावना अधिक बढ़ी है। अभियान की पारदर्शिता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए हरियालो राजस्थान मोबाइल एप तैयार किया गया है। इस एप के माध्यम से लगाए गए प्रत्येक पौधे की जियो टैगिंग की जा रही है, ताकि उसकी सुरक्षा और संवर्धन पर सतत निगरानी रखी जा सके। राज्य सरकार के प्रयास से यह अभियान सिर्फ सरकारी कार्यक्रम तक सीमित न रखकर जनआंदोलन बन गया है। नदियों और तालाबों के किनारों, औद्योगिक क्षेत्रों के आसपास, विद्यालयों, अस्पतालों तथा नगरीय क्षेत्रों में पौधारोपण को प्राथमिकता दी जा रही है। सामाजिक संगठनों, शैक्षिणक संस्थाओं और स्वयंसेवी संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी से यह अभियान आमजन से सीधा जुड़ रहा है। पौधे को लगाने से लेकर उन्हें वृक्ष बनने तक सहेजने का संकल्प श्री भजनलाल शर्मा की पर्यावरणीय सोच को दर्शाता है। यह पहल राजस्थान को हरित और समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में मील का पत्थर साबित होगी।

ईशा सैनी, सहायक जनसंपर्क अधिकारी, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 20 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 12:27 तक, सिद्धि योग सायं 6:13 तक, तैतिल करण दिन 1:59 तक, चन्द्रमा आज सायं 6:53 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज बीछ बारस, वत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत, जैन प्रयुषण आरम्भ (चतुर्थी पक्ष) है। आज शुक्र कर्क राशि में रात्रि 1:20 पर प्रवेश करेगा। आज राजीव गांधी जन्म दिवस और सद्भावना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:20 तक, चर 3:43 से 5:20 तक, लाभ 5:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:04, सूर्यास्त 6:56

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

धनु
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।